बीजरूप स्थिति का अनुभव करने के लिए विशेष कामेंट्री

मैं ब्रह्माण्ड निवासी बीजरूप आत्मा हूं ...।

मैं आत्मा साक्षी होकर स्वयं को देख रही हूं..., मेरी देह के मस्तक के बीचोंबीच गेट खुलता है और मैं जगमगाती हुई ज्योति बिन्दू आत्मा उस गेट से बाहर निकल जाती हूं...। मैं स्वयं के स्परूप को स्पष्ट अनुभव कर रही हूं..., ऊपर की ओर उड़ रही हूं..., जा रही हूं, जा रही हूं..., ऊपर की ओर जा रही हूं, ऊपर, ऊपर, बहुत ऊपर, सूरज, चांद, सितारों से भी पार दूर अति दूर जा रही हूं, जा रही हूं...। सीधा ब्रह्माण्ड, परमधाम की ओर जा रही हूं..., ब्रह्माण्ड अथवा परमधाम अपने घर पहुंचते ही एक अद्भुत लाइट का गेट दिखाई दे रहा है..., मैं आत्मा जैसे ही उस घर में लाइट के गेट को टच करती हूं तो वह गेट खुल जाता है..., गेट खुलते ही चारों ओर आकर्षणमय लाइट ही लाइट नजर आ रही है.., जैसे कि चारों ओर लाइट ही लाइट का समन्दर है... चारों ओर झिलमिलाती, जगमगाती मणियां ही मणियां दिखाई दे रही हैं...,

सामने महाज्योति तेजोमय मुस्कराते हुए ब्रह्मचर्य के सागर शिव बाबा जगमगा रहे है..., मैं बीज रूप आत्मा ब्रह्मचर्य के सागर शिव बाबा के साथ कम्बाइंड हो जाती हूं..., बाबा के साथ कम्बाइंड होते ही मुझ आत्मा की सभी प्रकार की हद की दुनिया की विस्तार को पाई शाखाएं समाप्त हो गई हैं..., भस्म हो गई हैं... केवल और केवल मैं आत्मा और मेरा प्यारा पिता परमात्मा दोनों रह गये हैं..., अहा कितना मजा आ रहा है..., आनंद ही आनंद..., परमानन्द है..., इसी अनुभव में मैं आत्मा खो गई हूं...।

अब मुझ आत्मा को शिव बाबा अनंत शक्तियों से फुलचार्ज कर सूक्ष्मवतन से इस हद की दुनिया को पावन बनाने की सकाश देने के लिए ब्रह्माण्ड से भेज रहे हैं..., मैं आत्मा ब्रह्माण्ड से नीचे सूक्ष्मवतन में आती हूं..., अपने फरिश्ते रूपी ड्रेस में प्रवेश करती हूं..., मस्तक में विराजमान हो गई हूं..., बापदादा का वरदहस्त मेरे सिर पर है..., मुझ फरिश्तों की आंखों से पूरे ब्रह्माण्ड की रोशनी निकल कर संसार की समस्त आत्माओं पर पड़ रही है..., सर्व आत्माओं को अब अपने घर शान्तिधाम की याद दिला रही है..., मेरे हाथों से, मस्तक से, नयनों से परमात्म शक्तियों की असंख्य किरणें निकलकर सर्व आत्माओं को, प्रकृति के पांचों तत्वों को पावन बना रही हैं...।

अब मैं आत्मा अपने लाइट के देह के साथ इस धरा पर अवतरित हो रही हूं..., सेवार्थ मिले इस मिट्टी के देह में प्रवेश कर रही हूं..., स्पष्ट अनुभव कर रही हूं कि मैं इस देह से बिल्कुल अलग हूं.., जब चाहूं मैं इस देह से अलग होकर अपने घर परमधाम चली जाती हूं..., सूक्ष्मवतन चली जाती हूं..., जब चाहे इस देह में आ जाती हूं..., वाह मेरे प्यारे मीठे बाबा, सचमुच आपका कमाल है..., आपने इतनी सुन्दर ड्रिल सिखाकर मेरे जीवन को कितना श्रेष्ठ बना दिया..।